[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3638

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

विकलांग चित्रकारों के चित्रों में रंगों की भूमिका

श्रीमती पूनम शर्मा
छात्र–पी एच ड़ी

रंगों के बिना जीवन अपूर्ण है। विकलांग चित्रकारों के चित्रों में रंगों का विशेष महत्व है नीरस जीवन जीने को मजबूर ये कलाकार शारीरिक अक्षमताओं के उपरांत भी अपनें चित्रों में रंगों के विशिष्ट संयोजन कर, उन्हें जीवित रुप प्रदान कर , प्राण डाल देते हैं ,चित्रों द्वारा मूक अभिव्यक्ति इतनी सशक्त होती है कि देखने वाला स्वप्न में भी यह नहीं सोच पाता कि इस चित्र को बनाने वाला विकलांग है।

ऐसे विशेष कलाकारों के रंगों का चयन अति विलक्षण होता है। वर्णों की विभिन्न रंगतों के कारण ही हम वर्ण विशेष का नाम ज्ञात कर पाते हैं। इन कलाकारों के चित्रों में रंगों के मान का विशेष घ्यान रखा गया है, प्रकाश व अंधकार के माघ्यम से आभा एवं छाया का प्रयोग दर्शनीय है चित्रों में सधनता युति–द्युति का अनुपम प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक एवं द्वितीयक तथा समीपवर्ती रंग जैसे लाल, पीला, नीला, नारंगी, हरा, बैंगनी, गुलाबी, आदि रंगों का प्रयोग किया गया है। रंगों का हमारी भावनाओं व मनःस्थितियों से सीधा सम्बन्ध होता है, चित्रकारों को रंगों के मनोवैज्ञानिक व लाक्षणिक प्रभावों का ज्ञान है, जैसे व्यक्ति प्रसन्न हो तो उसे श्रांगारिक भाव लिए हुए रंग जैसे लाल, गुलाबी पसंद आएंगे। यदि उदास है तो उदासीनता रंगत वाले रंग किए जाएंगे इनके चित्रों में रंगों का विशेष घ्यान रखा गया है एक चित्र में वनराज का चित्रण पीले रंग के विभिन्न रुपों से किया है। छाया प्रकाश दिखाकर गर्व से बैठे वनराज के चित्र में पीले रंग के कारण विशिष्ट ओज का प्रभाव है। नारंगी तथा गहरे भूरे रंग से चित्र में छाया प्रकाश का प्रभाव श्रेष्ठ है।

दूसरे चित्र में नारंगी व सफेद के मिश्रण से सुनहरी मछलीयां बनाई गई हैं। समुद्री पौधों की रचना गहरे हरे व पीले रंग से की गई है। एक अन्य चित्र में गुलाबी पेड़ एवं सफेद भवन का निर्माण किया गया है जो कि मन में शांति का भाव उत्पन्न करता है।

एक चित्र में दो ग्रामीण महिलाएं घरेलू कार्यों में व्यस्त दिखाई गई हैं विभिन्न रंगों का सुन्दर समायोजन किया गया है। नाव खेते तीन बालकों के चित्र में पानी गहरापन, शीतलता व सघनता लिए है बालकों के शरीर में विशेष लय है।

इन कलाकारों ने सभी विषयों पर अपनी कूची चलाई है, फूलदान, हाथी, समुद्र के किनारे बने लाईट हाउस, पहाड़ों की तराई में सघन हरे वृक्ष, नदी का शांत जल, झरनों की तरंग सभी इनके चित्रों द्वारा सहज ही दर्शनीय हैं।

इन कलाकारों ने तेल रंग, पानी के रंग दोनो का ही प्रयोग किया है इन चित्रों की विशिष्टता इनका विकलांगो द्वारा बनाया जाना है सभी चित्र मुंह अथवा पैरों से बनाए गए हैं।

विशिष्ट कलाकार :–

1– **गनेश कुमार** – जन्म 1969 पोलियो ग्रस्त हैं, तीन वर्ष की उम्र से चित्रकला कर रहे हैं। विद्यालय नही जा पाए, स्वयं ही हिन्दी, इंग्लिश पढ़ना सीखा। सभी कार्य स्वयं करने सीखे । अभी तक आप 5,000 चित्र बना चुके हैं। ये केरल में अपने परिवार के साथ रहते हैं। नियमित तौर पर चित्रकला प्रदर्शनी में भाग लेते रहते हैं और अन्य अपंग कलाकारों की सहायता करते रहते हैं। अधिकतर तेल रंगों का प्रयोग करते हैं, रंगो के विभिन्न रूपों को अपनी कला में जीवंत रूप में प्रयुक्त करते हैं।

2– **हरिराम कोहली** – जन्म 1953 , भारतीय वायुसेना में कार्य किया। उनकी स्पाइनल कॉलम में फ्रैक्चर हो गया और इस दुर्घटना में वे अपने शरीर का संतुलन खो बैठे और ;फनंकतपचसमहपब द्ध हो गए। विरक्त होने के बजाय उन्होने अपने आपको चित्रकला में प्रशिक्षित किया। वे मुंह से चित्र बनाते हैं। और प्रारंभ में ग्रीटिंग कार्ड़ बना कर घनार्जन करने लगे। उनकी विशेष रूचि फुल–पौघे और पशु–पक्षियों में है। अपने 5000 से अधिक बनाए हुए चित्र बेच चुके हैं। और आज भी शिद्वदत से चित्रकला में जुटे हैं। सभी प्रकार के रंगों का प्रयोग करते हैं जल रंग, तैल रंग आदि।

संदर्भ सूची :–

1 *INDIAN MOUTH AND FOOT PAINTING ARTIST [website :- www.imfpa.co.in]*
2 *पुस्तक – ललितकला के आधारभूत सिद्धान्त*
लेखक – कासलीवाल मीनाक्षी भारती
प्रकाशक – राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
3 *साक्षात्कार – व्यक्तिगत साक्षात्कार*
कलाकार – नदीम शेख
जन्म स्थान – मुम्बई
विकलांगता – पैदाइशी दोनों हाथ नहीं हैं अन्य भाई बहन सामान्य हैं
सभी प्रकार के चित्र बनाते हैं वाटरकलर का प्रयोग ज्यादा करते हैं।